चमत्कारों की अपेक्षा रखें!

अलौकिक रविवार

रविवार, 29 मार्च 2026 – संदेश रूपरेखा

विश्वास ही अपेक्षा है!

इब्रानियों 11:1 (HINOVBSI)

अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

"जिन बातों की आशा की जाती है" वे वे बातें हैं जिनकी हम इच्छा करते हैं या जिनकी हम अपेक्षा रखते हैं।
विश्वास में आशा या अपेक्षा का तत्व होता है।

यीशु की सेवकाई में हम एक सामान्य बात देखते हैं—लोग अपेक्षा के साथ उसके पास आते थे।

महान विश्वास में महान अपेक्षा होती है!

दो अवसरों पर जब प्रभु यीशु ने लोगों के विश्वास को "महान" कहा, तो हमने देखा कि वे अडिग अपेक्षा के साथ आए थे।

रोमी सूबेदार (*मत्ती* 8:5-13)

मत्ती 8:8,10 (HINOVBSI)

8 सूबेदार ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैं योग्य नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए; परन्तु केवल एक वचन कह दे, तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।"
10 यह सुनकर यीशु ने अचंभा किया और अपने पीछे आने वालों से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, इतना बड़ा विश्वास मैंने इस्राएल में भी नहीं पाया!"

हम देखते हैं कि सूबेदार के पास कोई संदेह नहीं था। उसकी अपेक्षा स्पष्ट थी—"मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।"

कनानी स्त्री (मत्ती 15:21-28)

हम उस स्त्री की घटना से परिचित हैं जो अपनी बेटी के छुटकारे के लिए यीशु के पास आई थी। उसने "ना" को स्वीकार नहीं किया।

मत्ती 15:28 (HINOVBSI)

तब यीशु ने उत्तर देकर उससे कहा, "हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है; जैसा तू चाहती है वैसा ही तेरे लिए हो।" और उसकी बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई।

क्या चमत्कारों, चिन्हों और अद्भुत कामों की अपेक्षा करना गलत है?

कभी-कभी हमें गलत रूप से सिखाया गया है कि चमत्कारों की अपेक्षा करना ठीक नहीं है।

कुछ लोग इस विषय में कुछ शास्त्रों का हवाला देते हैं।

यूहन्ना 4:48 (HINOVBSI)

तब यीशु ने उससे कहा, "जब तक तुम लोग चिन्ह और अद्भुत काम न देखो, तब तक विश्वास न करोगे।"

यहाँ यीशु लोगों की स्थिति बता रहे थे—कि बहुत से लोग तब ही विश्वास करते हैं जब वे कुछ अलौकिक अनुभव करते हैं। फिर भी यीशु ने उस सरदार के पुत्र को चंगा किया—उन्होंने चमत्कार को रोका नहीं।

लेकिन जब फरीसी और धार्मिक अगुवे यीशु के पास यह कहते हुए आए कि वह अपने आप को सिद्ध करे, तब यीशु ने कोई चमत्कार नहीं किया।

मत्ती 12:38-39 (HINOVBSI)

38 तब कुछ शास्त्री और फरीसी कहने लगे, "हे गुरु, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं।"

39 उसने उत्तर दिया, "दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चिन्ह ढूँढ़ती है; परन्तु योना नबी के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उसे न दिया जाएगा।"

जब लोग यीशु को "परखने" के लिए चिन्ह माँगते थे, तो उन्होंने उन्हें अपने मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर इंगित किया।
लेकिन जो लोग विश्वास से अपनी आवश्यकता के लिए आए—उनके लिए उन्होंने चमत्कार किए।

इसलिए यह कहना सही नहीं है कि हमें चमत्कारों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। बहुत से लोग विश्वास के साथ यीशु के पास आए—और उन्होंने उन्हें चंगा किया और छुटकारा दिया।

हम चमत्कारों की अपेक्षा क्यों नहीं करते?

इसके कई कारण हो सकते हैं, परन्तु एक मुख्य कारण है—हमारे पिछले अनुभव।

उस पिता के बारे में सोचिए जिसने अपने दुष्टात्मा-ग्रस्त पुत्र को यीशु के चेलों के पास लाया था, परन्तु वे उसे छुड़ा नहीं सके।

यह उसके विश्वास को हिला देने वाला अनुभव था। इसलिए जब यीशु उसके पास आए, तो उसका विश्वास कमजोर था। उसने कहा —"यदि तू कुछ कर सकता है..."

मरकुस 9:22-24 (HINOVBSI)

22 "...यदि तू कुछ कर सकता है, तो हम पर तरस खा और हमारी सहायता कर।"
23 यीशु ने उससे कहा, "यदि तू विश्वास कर सकता है, तो विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ संभव है।"
24 तब उस लड़के के पिता ने आँसू बहाते हुए कहा, "मैं विश्वास करता हूँ; मेरे अविश्वास में सहायता कर!"

यीशु ने उसे प्रोत्साहित किया—"यदि तू विश्वास कर सकता है..."

हम में से कई लोगों की तरह, हमारे पिछले अनुभव हमें निराश करते हैं और हम सोचने लगते हैं—"क्या परमेश्वर मेरी सहायता कर सकता है?"
परन्तु यीशु हमें प्रोत्साहित करते हैं—"यदि तू विश्वास कर सकता है, तो सब कुछ संभव है।"

अपने चमत्कार के लिए अपनी अपेक्षा बढ़ाओ!

कुछ भी हमें रोकने न पाए।
परमेश्वर से अपने लिए चमत्कार की अपेक्षा रखें।

अपनी अपेक्षा को इस पर आधारित करें कि परमेश्वर कौन है और उसने क्या वादा किया है

परमेश्वर वही है जो उसने कहा है।
परमेश्वर वही करेगा जो उसने कहा है।

अपने चमत्कार की अपेक्षा करें!